HANS SHODH SUDHA , Vol. 1, Issue. 1, (2020) pp. 139-140

कोरोना काल रंगमंच का अकाल

कपिल कुमार

वर्ष 2020 को यदि कोरोना वर्ष के नाम से संबोधित किया जाए तो शायद इस नामकरण से किसी को आपत्ति नहीं होगी। इतिहास के पन्नों पर यह वर्ष इतनी पक्की रोशनाई से छापा जाएगा कि जब तक मानव जाति का अस्तित्व रहेगा तब तक इसकी गाथा पूरे विश्व में गायी जाएगी। इस गाथा में हर्षोल्लास नहीं बल्कि सामूहिक रूदन का स्वर होगा।

कोरोना ऐसी वैश्विक महामारी के रूप में विश्व के सामने परिचित हुआ जिसने आम आदमी के जीवन में उथल-पुथल मचा दी। इस बीमारी के उपचार हेतु दवा के अभाव में विभिन्न देशों की सरकारों द्वारा राष्ट्र की तमाम गतिविधियों पर रोक लगा दी गई जिससे साधारण जनमानस की दिनचर्या पर गहरा असर पड़ा अथवा कहा जा सकता है कि उनके जीवन का प्रवाह ही थम गया। आम भाषा में इसे 'लॉकडाउन' की संज्ञा दी जाती है। कई अन्य विकसित देशों की भांति ही भारत में भी लॉकडाउन लागू किया गया जिसके पहले चरण की शुरूआत मंगलवार 24 मार्च, 2020 की मध्यरात्रि से हुई।[1]

इस लॉकडाउन के चलते देश की अर्थव्यवस्था डगमगाने लगी। साथ ही साथ जहां एक ओर इसने शैक्षिक, सामाजिक, सांस्कृतिक, व्यावसायिक इत्यादि क्षेत्रों को व्यापक रूप से प्रभावित किया, वहीं दूसरी ओर साहित्यिक जगत की इमारतों का निर्माण कार्य भी अवरुद्ध कर दिया। कोरोना काल में साहित्य की जिस विधा के स्वास्थ्य पर सबसे ज्यादा असर पड़ा, वह है- नाटक अथवा रंगमंच। नाटक पर सबसे ज्यादा प्रभाव पड़ने का एक कारण उसका अन्य साहित्यिक विधाओं से भिन्न होना भी है। इस संबंध में डॉ. अमरनाथ लिखते हैं कि ''साहित्य की दूसरी विधाओं में रचनाकार वर्णनात्मक, चित्रात्मक, एवं संगीतात्मक भाषा के जरिए ही विषयवस्तु को प्रकट करता है, किंतु नाटक में अभिनय के जरिए विषयवस्तु को प्रत्यक्ष घटित होते हुए दिखलाया जाता है। इसी अर्थ में नाटक, साहित्य की अन्य विधाओं से भिन्न है।''[2]

यह सर्वविदित है कि नाटक का संबंध सिद्धांत की तुलना में व्यवहार से अधिक है। व्यावहारिक रूप से कोई भी नाट्य कृति रंगमंच पर ही अपना संपूर्ण आकार ग्रहण करती है। रंगमंच को साहित्य के अंतर्गत संप्रेषण और साधारणीकरण का सशक्त माध्यम मान सकते हैं। किंतु कोरोना काल में साहित्य की इस अतुल्य विधा पर अर्धविराम सा लग गया है। इस दौरान शिक्षा जगत में ई-शिक्षा पर अत्यधिक बल दिया जा रहा है। आजकल 'सेमीनार' के स्थान पर 'वेबिनार' का आयोजन किया जा रहा है जिसके अंतर्गत कार्यक्रम आयोजित किये जाते हैं। कई आधुनिक तथा विकसित ई-माध्यमों द्वारा साहित्य की अन्य विधाओं पर बात-चीत, पढ़ना-पढ़ाना, परीक्षाओं का आयोजन इत्यादि संभव है किंतु रंगमंच में इन सभी बातों की गुंजाईश बहुत कम नजर आती है क्योंकि रंगमंच का संबंध पढ़ने-पढ़ाने के साथ-साथ करने-कराने से भी है और इसकी परीक्षा किसी कागज या कंप्यूटर में न होकर ठोस मंच पर होती है। गिरीश रस्तोगी लिखते हैं कि ''नाटक कोई 'पाठ्य-पुस्तक' मात्र नहीं है जैसे कि कहानी और उपन्यास और उसकी तरह नाटक का सीधा संबंध पाठकों से होता है। बल्कि नाटक एक जीवंत अनुभव है जो अपनी जीवंतता रंगमंच पर ही प्राप्त करता है। नाटक की सही कसौटी रंगमंच ही है।''[3]

रंगमंच में रट्टेबाजी की कोई संभावना ही नहीं है, यहां तो मेहनत, अनुभव और नवीन प्रयोगों से कलाकार अपने ज्ञान के फलक को विस्तार देता है। रंगमंच किसी एक व्यक्ति विशेष केंद्रित नहीं होता, यह तो सामूहिक गतिविधि है जिसमें निर्देशक, अभिनेता, दृश्य सज्जाकार, सहायक इत्यादि कारकों के साथ-साथ दर्शकों को भी महत्वपूर्ण अंग समझा जाता है। रामस्वरूप चतुर्वेदी इसे और अधिक विस्तार से समझाते हुए लिखते हैं कि ''नाटक के प्रस्तुतिकरण में अनेक व्यक्तियों का सामूहिक योगदान है— नाटक-लेखक, निर्देशक, अभिनेता, सज्जा-सहायक, मंच-व्यवस्थापक, प्रकाश चालक और इनके पीछे कार्य करने वाले अनेक शिल्पी तथा कारीगर। नाट्य-रचना में इन सबका गुणात्मक सहयोग है। दूसरी ओर नाटक का आस्वाद भी अपनी प्रकृति में सामूहिक है।''[4] अत: रंगमंचीय गतिविधियां न होने के कारण उपर्युक्त सभी का कौशल एवं प्रतिभा प्रभावित हो रही है। वर्तमान परिवेश में कोरोना महामारी के चलते इन सभी इकाइयों का एक स्थान पर एकत्र हो पाना संभव नहीं हैं। अत: साहित्य की अन्य गतिविधियों का आयोजन तो संभव है किंतु रंगमंचीय प्रस्तुति पर विचार करना भी कठिन है।

शोधार्थी, हिंदी विभाग, कुमायूँ विश्वविद्यालय, नैनीताल

इन दिनों रंगमंच हाशिये पर जाता दिखाई दे रहा है। हालांकि विभिन्न साहित्यिक कार्यक्रमों की भांति रंगमंच पर भी वेबिनार आयोजित किया जा सकता है किंतु वहां रंगमंच की केवल सैद्धांतिक बातें ही संभव हैं और जैसा कि पूर्व में चर्चा की जा चुकी है कि व्यवहार के बिना रंगमंच अधूरा है। ऑनलाईन कार्यक्रम की बात की जाए तो राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय ने वेबिनार श्रृंखला का आयोजन किया था[5] जिसमें रंगमंच के कई बड़े नामों ने अपनी बातें साझा की किंतु एक बार एन.एस.डी. के विद्यार्थियों से ही पूछा जाना चाहिए कि क्या वह केवल इन वेबिनार के आयोजनों से खुश एवं संतुष्ट हैं? और केवल एन.एस.डी. ही क्यों, रंगमंच से जुड़े तमाम कलाकारों से पूछा जाए कि क्या वेबीनार थियेटर की जगह ले सकता है?

रंगमंच के थमे हुए प्रवाह का असर नाट्य लेखन पर भी पड़ रहा है और यह असर तब तक रहेगा जब तक रंगमंच अपनी वास्तविक गति इख्तियार नहीं कर लेता। कोई भी नाट्यकृति अपनी सार्थकता एवं महत्वता मंच पर ही साबित करती है। नाटक मंच पर ही सही जिंदगी जीता है और नाटक में प्राण-प्रतिष्ठा भी मंच ही करता है। रंगमंच के अभाव में नाट्य लेखन का कुंठित हो जाना स्वाभाविक है।

रंगमंचीय गतिविधियों की अवरुद्धता के लिए न ही सत्ता को दोष दिया जा सकता है और न ही व्यवस्था को। लॉकडाउन से आम आदमी का जीवन अस्त-व्यस्त तो हुआ है किंतु इस पाबंदी के पीछे भी जनता का हित ही अंतर्निहित है। कुछ जोशीले और जुनूनी लोग यह दलील पेश कर सकते हैं कि जब वैवाहिक समारोह के लिए पचास लोगों की अनुमति मिल सकती है तो साहित्यिक कार्यक्रमों अथवा रंगमंचीय गतिविधियों के लिए क्यों नहीं? ऐसी स्थिति में इस बात को समझना होगा कि विवाह जैसे कार्यक्रमों के लिए तैयारियों की आवश्यकता होती है किंतु प्रेक्टिस या रिहर्सल की नहीं। थियेटर के साथ बात बिल्कुल पलट जाती है। यहां प्रेक्टिस और रिहर्सल पर ही पूरा मामला टिका है। एक दिन की मंचीय प्रस्तुति के पीछे लगभग एक महीने की मेहनत होती है। और यह मेहनत वैयक्तिक होने के साथ-साथ सामूहिक भी होती है। नाट्य प्रस्तुति के सामूहिक सहयोग के संबंध में गिरीश रस्तोगी अपना मत रखते हुए कहते हैं कि "नाटक एक त्रिकोण से आबद्ध है- नाटककार, निर्देशक (सूत्रधार) और दर्शक लेकिन अभिनेता और अन्य सारा समूह भी उसका अनिवार्य अंग है इसलिए सारी नाटक-प्रक्रिया इनके निरंतर तारतम्य, सहयोग, सामंजस्य से ही संभव है जो प्रत्यक्षत: रंगमंच पर दृष्टिगोचर होता है।"[6] अत: ऐसी स्थिति में जब पूरे देश की रफ्तार ठप्प पड़ी हो, रंगमंचीय आयोजन की कोई संभावना नजर नहीं आती।

कोरोना काल में नाटक खेलने की गुंजाईश कहीं दिखाई देती है तो वह है नुक्कड़ नाटक की फार्म में। स्वतंत्र रूप से नुक्कड़ नाटक खेलने की भी मंजूरी आपको नहीं है किंतु विशिष्ट मामलों में ऐसा संभव है। यदि आप नुक्कड़ नाटक खेलने में दिलचस्पी रखते हैं तो किसी राजनैतिक पार्टी से संपर्क कर लीजिए। देश में सबकुछ रुक सकता है किंतु चुनाव नहीं, और यह बात किसी से नहीं छुपी कि चुनावी माहौल में कई राजनैतिक दल नुक्कड़ नाटकों द्वारा अपनी पार्टी का प्रचार करते हैं। यदि चुनाव नहीं भी हुए तो भी कोरोना काल के दौरान अपनी पार्टी द्वारा किए गए जनोद्धार और इनके द्वारा दी गई सहायता का बखान तो पार्टी के कार्यकर्ता करेंगे ही जिसके लिए नुक्कड़ नाटकों का सहारा लिया जा सकता है। किंतु ऐसे नुक्कड़ नाटकों को साहित्यिक श्रेणी से अलग, व्यवसाय की श्रेणी में रखना शायद ज्यादा जायज होगा।

बहरहाल जैसा कहा जाता है कि उम्मीद पर दुनिया कायम है, तो हम भी यह उम्मीद करते हैं कि जल्द से जल्द स्थिति सामान्य होगी और एक अनचाहे ठहराव के बाद रंगमंचीय गतिविधियों का सिलसिला पुन: अपनी गति पकड़ेगा। साथ ही साथ इस बात में भी कोई संदेह नहीं किया जा सकता कि स्थिति सामान्य होते ही कई नाटक कोरोना महामारी तथा लॉकडाउन से संबंधित विषयों पर ही खेले जाऐंगे। आशा करते हैं कि जल्द ही रंगमंच की दुनिया में फिर से चहल-पहल होगी। निर्देशक और कलाकार फिर से, नाटक खेलने से एक रोज पहले स्टेज का जायजा लेंगे। इतने समय से सुनसान और वीरान थियेटर में फिर से तालियों की गड़गड़ाहट गूंज उठेगी। उदासी में प्रतीक्षा कर रहा मायूस मंच फिर से अपने कलाकारों की आहट पहचान पाएगा। अंधकार में डूबा हुआ ऑडिटोरियम फिर से रोशनी में जगमगाएगा। जल्द ही मंच का पर्दा फिर से उठेगा। जल्द ही...

संदर्भ सूची :

1. 'जनसत्ता' (ई-समाचार पत्र), नई दिल्ली, बुधवार 25 मार्च, 2020, पृ.01
2. डॉ. अमरनाथ, 'हिंदी आलोचना की पारिभाषिक शब्दावली', नई दिल्ली, राजकमल प्रकाशन, संस्करण-2020, पृ.सं. 202
3. रस्तोगी, गिरीश, 'मोहन राकेश और उनके नाटक', इलाहाबाद, लोकभारती प्रकाशन, संस्करण- 2008, पृ.स. 01
4. चतुर्वेदी, रामस्वरूप, 'हिंदी साहित्य और संवेदना का विकास', इलाहाबाद, लोकभारती प्रकाशन, संस्करण- 2012, पृ.स. 147
5. https://nsd.gov.in/delhi/index.php/webinar-series-theatre-for&allè
6. रस्तोगी, गिरीश, 'मोहन राकेश और उनके नाटक', इलाहाबाद, लोकभारती प्रकाशन, संस्करण- 2008, पृ.स. 02